एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 02 (मार्च-अप्रैल, 2022)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

# जीरा के मुख्यतः रोग एवं उनका नियन्त्रण

(*महेश कुमार मीमरोट, संजय खरते, सुषमा वर्मा एवं आरती जाटव )
स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर
* mahesh2805.mk@gmail.com

**म्लानि या उकठा रोग:**

जीरे में उकठा रोग *फ्यूजेरियम ओक्सीस्पोरम* स्पीं. *क्यूमिनी* नामक कवक से होता हैं।

**लक्षण:**

रोग से ग्रसित पौधे हरे अवस्था में ही मुरझा कर सूख जाते है। इस रोग का आक्रमण पौधों की किसी भी अवस्था में हो सकता हैं परन्तु फसल की प्रारम्भिक अवस्था में अधीक होता हैं यह रोग पौधों की जड़ों में लगता हैं, इसकी पूर्णतया रोकथाम कठिन हैं

**नियन्त्रण :-**

रोग के संक्रमण को कम करने के लिए द्विर्धकालीन वर्ष का फसल चक्र अपनावें स्वस्थ व रोग रहित बीजों को बॉविस्टीन या एग्रोसेन जी एन दवा से 2 ग्राम प्रति किग्रा बीज की दर से उपचारित कर बुवाई करें। खेत की गर्मीयों में मई-जून के महिनों में गहरी जुताई का खुला छोड़ देवें। मृदा में जैव नियन्त्रण *ट्राइकोडर्मा वीरिडी*, *ट्राइकोडर्मा हरजीयनम* का प्रयोग का रोग जनक की वृद्वि को रोका जा सकता हैं, इस रोग से कम प्रभावीत होने वाली किस्मों की बुवाई करनी चाहिये। जैसे - आर.एस.-1, आर. जेड़-209, एम.सी.-43, गुजरात जीरा-1 आदि ।

**झुलसा रोग:**

जीरे में झुलसा रोग *अल्टरनेरिया बोव्रिसी* नामक कवक से होता हैं।

**लक्षण:**

झुलसा रोग के प्रकोप से प्रभावित पौधों पर भूरे-काले धब्बे दिखाई देते हैं जो बाद में गहरे काले हो जाते है। फसल में फूल आने वाली अवस्था में अगर आकाष में बादल छाये रहे तो इस रोग का प्रकोप बढ जाता है। इस रोग से ग्रसीत पौधों की उपज व गुणवत्ता में कमी आ जाती है।

**नियन्त्रण :-**

संक्रमित पौधे के मलबे को इकट्ठा करें और नष्ट करें। स्वस्थ बीज का प्रयोग करें और बीज को कैप्टान (0.3%) से उपचारित करें। रोग की शुरुआत के साथ, फसल को फफूंदनाशक जैसे मैन्कोज़ेब (0.25%) या प्रोपिकोनाज़ोल (0.03%) के साथ स्प्रे करें रोगरोधी लाइनों का उपयोग करें जैसे MC-43, गुजरात जीरा - 1, RZ-19 और गुजरात जीरा -2, बुवाई के 30-35 दिन बाद फसल पर थायोफनेट मिथाइल 70 डब्ल्यू

पी. या मेन्कोजेब या जाइरम 2.0 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिडकाव करें। आवश्यकतानुसार, 40-45 दिन के अन्तराल पर छिडकाव दोहरावे | झुलसा व छाछिया दोनों रोगों के एक साथ नियंत्रण के लिए जाइनेब 68 प्रतिशत + हैक्साकोनाजोल 4 प्रतिशत के बने हुए मिश्रण का 2 ग्राम प्रति लीटर या मेटीराम 55 प्रतिशत + पैराक्लोस्टरोबिन 5 प्रतिशत के बने मिश्रण का 3.5 ग्राम प्रति लीटर या पैराक्लोस्टरोबिन 43.3 प्रतिशत + इपोक्सीकोनाजोल 5 प्रतिशत के बने मिश्रण का 4.5 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिडकाव करें |

**छाछया या चूर्णिल आसिता :-**

जीरे में चूर्णिल आसिता रोग *एरीसिप पॉलीगोनी* नामक कवक से होता हैं।

**लक्षण:**

यह रोग निचले पत्तों पर ग्रेश स्पेक के रूप में दिखाई देता है जो पत्ती की सतह को बड़ा और कवर करता है। तना, फूल, गर्भ और फल भी कवक वृद्धि के साथ कवर होते हैं। संक्रमित पौधे कम, सिकुड़े हुए, हल्के वजन वाले बीज धारण करते हैं।

**नियन्त्रण :-**

डायनोकैप (0.05%), कार्बेन्डाजिम (0.1%) या हेक्साकोनाज़ोल (0.05%) जैसे कवक के छिड़काव से रोग को प्रभावी रूप से नियंत्रित किया जा सकता है और 10- 14 दिनों के अंतराल पर दोहरा सकते हैं। यदि रोग के लक्षण दिखाई दे तो घुलनशील गंधक 2.5 किलो अथवा केराथेन (डाईनोकेप) 400 मिली लीटर घोल का प्रति हेक्टेयर की दर से छिडकाव करें | आवश्यकतानुसार 40-45 दिन के अन्तराल पर छिडकाव दोहरावे | झुलसा व छाछिया दोनों रोगों के एक साथ नियंत्रण के लिए जाइनेब 68 प्रतिशत + हैक्साकोनाजोल 4 प्रतिशत के बने हुए मिश्रण का 2 ग्राम प्रति लीटर या मेटीराम 55 प्रतिशत + पैराक्लोस्टरोबिन 5 प्रतिशत के बने मिश्रण का 3.5 ग्राम प्रति लीटर या पैराक्लोस्टरोबिन 43.3 प्रतिशत + इपोक्सीकोनाजोल 5 प्रतिशत के बने मिश्रण का 4.5 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिडकाव करें |

**विटम्स ब्रूम**

यह बीमारी पहली बार राजस्थान में देखी गई थी, जहाँ यह 31 प्रतिशत तक उपज का नुकसान हुआ था। यह फाइटोप्लाज्मा के कारण होता है और टेट्रासाइक्लिन हाइड्रोक्लोराइड इसे नियंत्रण में प्रभावी पाया गया है।